मुख्य जनसंपर्क अधिकारी का कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

प्रेस विज्ञप्ति

सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र, जेएमआई ने किया 'साउथ अटलांटिक वीमेन'स फ़ूड हेरिटेज सिस्टम्स' पर एक विशेष व्याख्यान आयोजित

नई दिल्ली, 17 मार्च, 2026

एक विशेष व्याख्यान के क्रम में, सरोजिनी नायडू महिला अध्ययन केंद्र ने 13 मार्च को डॉ. पाओला वर्गस अराना को "वीमेन'स फ़ूड हेरिटेज सिस्टम्स: फेमिनिस्ट पोलिटिकल एकॉलोजी इन द साउथ अटलांटिक" शीर्षक पर व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया। इस व्याख्यान में अफ्रीकी और अफ्रीकी-कोलंबियाई महिलाओं के कृषि ज्ञान की ऐतिहासिक निरंतरता और समकालीन लचीलेपन पर प्रकाश डाला गया और उनकी पद्धतियों को खाद्य सुरक्षा और जलवायु लचीलेपन के लिए महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे के रूप में प्रस्तुत किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत विशेष व्याख्यान की समन्वयक डॉ. अमीना हुसैन के स्वागत वक्तव्य से हुई, जिसके बाद केंद्र की मानद निदेशक प्रो. निशात ज़ैदी ने डॉ. पाओला का परिचय कराया। डॉ. पाओला के व्याख्यान ने व्यवस्थित रूप से पाँच शताब्दियों तक चली महिलाओं के नेतृत्व वाली खाद्य विरासत प्रणाली की जानकारी दी, जो पश्चिम अफ्रीका और अफ्रीकी-कोलंबियाई क्षेत्रों को आपस में जोड़ती है। उन्होंने दिखाया कि कैसे गुलाम बनाई गई अफ्रीकी महिलाएँ कोलंबिया के सोने के खदानों तक उन्नत पारिस्थितिक और पाक-कला संबंधी ज्ञान लेकर गईं, जहाँ उन्होंने फसलों का चयन, उन पर प्रयोग और उन्हें आपस में मिलाकर–न तो बेतरतीब ढंग से और न ही निष्क्रियता से–खेती के तरीकों को नए पारिस्थितिक तंत्रों के अनुरूप सक्रिय रूप से ढाला। इस व्याख्यान में मुख्य फ़सलों के दो-तरफ़ा आवागमन पर रोशनी डाली गई: केले, रतालू और चावल जैसी अफ़्रीकी फ़सलें पश्चिम की ओर गईं, जबकि कसावा, मूँगफली और मक्का जैसी अमेरिकी फ़सलें पूरब की ओर बढ़ीं; और इन दोनों ही दिशाओं में इस एकीकरण को आगे बढ़ाने में महिला विशेषज्ञों ने अहम भूमिका निभाई।

अनुकूलनशील निरंतरता पर जोर देते हुए, डॉ. पाओला ने तर्क दिया कि महिलाओं की प्रथाएँ कभी भी स्थिर अस्तित्व नहीं थीं, बल्कि दासता, विस्थापन, जलवायु परिवर्तन और नीतिगत दबावों के बीच गतिशील पुनर्गठन थीं। उन्होंने इस लचीली ज्ञान प्रणाली की तुलना उत्पादकता वृद्धि, एकल-कृषि फसलों की खेती और कॉरपोरेट एकाग्रता को प्राथमिकता देने वाले प्रमुख कृषि-तकनीकी मॉडलों से की–जिन्हें 2025 के लैंसेट आयोग ने ग्रहीय सीमा उल्लंघन के प्राथमिक चालकों के रूप में पहचाना था। व्याख्यान में जेंडर और शक्ति पर भी चर्चा की गई, जिसमें यह दस्तावेजीकरण किया गया कि कैसे दास व्यापार ने पश्चिम अफ्रीका में महिलाओं के नेतृत्व वाली कृषि प्रणालियों को बाधित किया, क्योंकि जहाजों की आपूर्ति के लिए एशियाई चावल (ओरिज़ा सैटिवा) को प्राथमिकता दी गई थी। इस बदलाव ने कृषि अधिकार को पुरुष प्रधान बना दिया और बीजों, भूमि और खाद्य उत्पादन पर महिलाओं के पारंपरिक नियंत्रण को कमजोर कर दिया। फिर भी, अफ्रीकी-कोलंबियाई महिलाएं नवाचार करना जारी रखती हैं–मेडेलिन में मलबे के ढलानों और डंपिंग स्थलों को कृषि-पारिस्थितिक उद्यानों,

सहकारी समितियों और सामुदायिक रेस्तरां में बदल रही हैं, साथ ही खाद्य-केंद्रित कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं का पुनर्वास कर रही हैं।

डॉ. पाओला ने यह तर्क देते हुए अपनी बात समाप्त की कि खाद्य की विरासत पोषण सुरक्षा में महत्वपूर्ण योगदान देती है, और यह कि नारीवादी राजनीतिक पारिस्थितिकी वह आवश्यक ढाँचा प्रदान करती है जिसके द्वारा महिलाओं के पारिस्थितिक और खाद्य संबंधी ज्ञान को, स्वाभाविक माने जाने वाले लैंगिक भूमिकाओं के बजाय, ऐतिहासिक रूप से निर्मित श्रम जिम्मेदारियों से उत्पन्न होने वाले ज्ञान के रूप में पहचाना जा सके। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि महिलाओं के ज्ञान को केवल एक सांस्कृतिक संदर्भ के रूप में नहीं, बल्कि खाद्य सुरक्षा के लिए एक बुनियादी ढाँचे के रूप में देखा जाना चाहिए; साथ ही, संसाधनों तक पहुँच, पारिस्थितिक परिवर्तन और टिकाऊ खाद्य प्रणालियों में लिंग को एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में समझा जाना चाहिए।

इस व्याख्यान में समकालीन संदर्भों से लिए गए ऐसे ठोस प्रमाण प्रस्तुत किए गए जो गैम्बिया से लेकर कोलंबिया तक फैले हुए थे। गैम्बिया में चावल के आयात पर निर्भरता 83% है, और फलों व सब्जियों की खपत अनुशंसित स्तरों से काफी नीचे है, जबकि वहाँ मोटापा और आयरन की कमी की समस्याएँ बढ़ रही हैं। वहीं, कोलंबिया में 42% अफ्रीकी-कोलंबियाई लोग खाद्य की असुरक्षा का सामना कर रहे हैं–यह समस्या व्यापार समझौतों के बाद मक्का के आयात में हुई भारी वृद्धि और बड़े पैमाने पर हुए आंतरिक विस्थापन के कारण और भी गंभीर हो गई है। इस व्याख्यान में पर्यावरणीय आँकड़ों को भी शामिल किया गया ताकि यह उजागर किया जा सके कि खाद्य प्रणालियाँ वैश्विक ग्रीनहाउस उत्सर्जन में लगभग 30% का योगदान देती हैं; साथ ही, शोध के माध्यम से यह भी दर्शाया गया कि दक्षिण अमेरिका में अफ्रीकी मूल के लोगों के सामूहिक क्षेत्रों में पेड़ों के आवरण में होने वाली वार्षिक कमी, गैर-अफ्रीकी क्षेत्रों की तुलना में 29–35% कम है।

इस ज्ञानवर्धक सत्र के बाद प्रो. निशात ज़ैदी द्वारा समापन टिप्पणियाँ दी गईं, और फिर एक जीवंत प्रश्नोत्तर सत्र आयोजित किया गया। इस सत्र ने प्रतिभागियों को नारीवादी राजनीतिक पारिस्थितिकी, पारिस्थितिक न्याय और महिलाओं के नेतृत्व वाली खाद्य विरासत प्रणालियों की परिवर्तनकारी क्षमता जैसे विषयों पर और अधिक गहराई से चर्चा करने का अवसर प्रदान किया।

इस व्याख्यान का औपचारिक समापन डॉ. अमीना हुसैन द्वारा दिए गए धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस अवसर पर, केंद्र की उस प्रतिबद्धता को पुनः दोहराया गया जिसके तहत 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' को केवल एक प्रतीकात्मक अवसर के रूप में ही नहीं, बल्कि गहन चर्चा, एकजुटता और नारीवादी भविष्य के निर्माण हेतु आवश्यक स्थान (spaces) बनाने की एक जीवंत प्रक्रिया के रूप में मनाया जाता है।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी